

अंगुलिमाल

-गिरिजाशंकर त्रिवेदी

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

संपादक : मूलशंकर भट्ट   बच्चों की कहानियां–१८

अंगुलिमाल

गिरिजाशंकर त्रिवेदी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

कार :

ल. मानकर

ोर रणदिवे (मुखपृष्ठ)

मूल्य :

दो रुपये

मुद्रक :

अकील दीवानजी
अॉनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जि, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००01
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाऊस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७, महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

अंगुलिमाल

बात उन दिनों की है, जब महात्मा बुद्ध जिन्दा थे। अहिंसा के प्रचार के लिए देशभर घूमना ही उनके जीवन का मकसद था।

एक बार वे श्रावस्ती नगर के घने वन में, अनार्थपिंडिक में आकर ठहरे। वहीं उन्होंने सुना कि श्रावस्ती के आस-पास के गांवों को अंगुलिमाल नाम के डाकू ने उजाड़ दिया है। वह डाकू उन गांवों के नजदीक के घने जंगलों में रहता है। राहगीरों को लूटना, गांवों में डाका डालना, जिसका चाहे खून कर देना उसके लिए आम बात है। हत्या के बाद वह उसकी अंगुलियां काट लेता और अपने गले की माला में गूंथ लेता है। अंगुलियों की माला पहनने की वजह से ही उसका नाम 'अंगुलिमाल' मशहूर हो गया था।

बुद्ध भगवान रोज भिक्षा मांगने नगर में जाते थे। एक दिन भिक्षा मांगते हुए, वे उस जंगल की ओर चल पड़े, जहां अंगुलिमाल रहता था।

संयोग ही था कि बुद्ध भगवान से पहले, उसी दिन अंगुलिमाल की मां अपने

बेटे को खून-खराबी के रास्ते से हटाने के लिए उधर आयी थी। नगरवासियों ने जब माता से उसके पुत्र के डाकू और खूनी बन जाने का कारण पूछा तो उसके ऐसी विचित्र कहानी सुनायी कि लोग चकित रह गये।

उसने रोते-रोते बतलाया, "मेरा लड़का जन्म से डाकू नहीं था। वह ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ था। उसके पिता कोशलनरेश के राजपुरोहित थे। उनका नाम भग्गव था। लड़के का नाम हमने अहिंसक रखा था।"

लोगों ने बीच में ही बड़े आश्चर्य से पूछा, "इतने अच्छे घराने में पैदा होकर भी अहिंसक, शेर से भी ज्यादा हिंसक और खूनी कैसे बन गया?"

मां बोली, "हमने अहिंसक को शिक्षा हासिल करने के लिए तक्षशिला भेजा था। वहां वह अपने आचार्य का सबसे प्यारा विद्यार्थी था। दूसरे विद्यार्थी उससे जलते थे, उसे सताते थे। मेरा लड़का बहुत बलवान था। वह किसी से डरता नहीं था। दूसरों द्वारा सताये जाने पर वह भी बदला लेने पर उतारू हो गया और नाम से अहिंसक होते हुए भी, हिंसक कहलाने लगा। उसके सहपाठियों ने उसे हिंसक कहना शुरू कर दिया।

"तक्षशिला के आचार्य भी अपने सबसे प्यारे शिष्य को हिंसक बनते देखकर बहुत दुखी थे। मगर कुछ कर न पाते थे। अहिंसक तबियत से हिंसक नहीं था, मगर अपमान से उसका खून खौल जाता था और वह अपने सतानेवाले सहपाठियों को इतना पीटता था कि वे लहूलुहान हो जाते थे।

आखिर में आचार्य ने उसे काबू में लाने की एक तरकीब सोची। शिक्षा पूरी होने पर उन्होंने अहिंसक को बुलाकर कहा, "बेटा, मुझे क्या गुरुदक्षिणा दोगे?"

अहिंसक हाथ जोड़कर बोला, "आचार्य जी, आप जो आज्ञा करेंगे, पूरी करूंगा, चाहे उसमें कितनी ही जोखिम हो।"

"मेरी इच्छा है" गुरू बोले, "तुम मुझे गुरुदक्षिणा के रूप में एक ऐसी माला भेंट दो, जिसमें अंगुलियां गुंथी हुई हों।"

वृद्धा माता की यह बात सुनकर नगरनिवासी और भी चकित हो गये। उन्होंने पूछा, "मां, क्या आचार्य ऐसे



" राहगीरों को लूटना, जिसका चाहे खून कर देना उसके लिए
आम बात थी ।"

हिंसाप्रिय होते हैं ? आचार्य को तो दयालु और सबकी भलाई चाहनेवाला होना चाहिए।"

मां ने कहा, "मेरे पुत्र अहिंसक नें जब मुझसे गुरुदक्षिणा की बात कही, तब मैं आचार्य के पास गयी और मैंने भी यही सवाल उनसे किया था।"

नागरिकों ने बड़ी बेचैनी से पूछा, "फिर आचार्य ने क्या जवाब दिया ?"

आचार्य ने बड़े दुख के साथ कहा, "माता, मैं भी मजबूर था। उसकी हिंसक आदत को मैं बदल न सका तो मैंने सोचा कि ऐसे हिंसक इन्सान का मर जाना ही बेहतर है। मेरा ख्याल था कि किसी को मारने की कोशिश में वह खुद मौत का शिकार हो जायेगा या हुकूमत के सिपाही उसे गिरफ्तार करके फांसी पर लटका देंगे।"

अंगुलिमाल की माता जिस दिन नगरवासियों को यह कहानी सुनाकर अपने खूनी बेटे की खोज में घने जंगल की ओर चली, उसी दिन भगवान बुद्ध भी जंगल के रास्ते पर आगे बढ़ थे।

उस दिन अंगुलिमाल को अपनी माला की हजार की संख्या पूरी करने में केवल एक अंगुली की कमी रह गयी थी। ९९९ अंगुलियां वह उस माला में गूंथ चुका था। उस दिन वह इस ताक में बैठा था कि कोई भी राहगीर उधर से गुजरे तो वह उसकी अंगुली काटकर गुरुदक्षिणा की भेंट पूरी कर ले।

अचानक ही उसने देखा कि उसकी बूढ़ी मां उधर चली आ रही है।

मां को देखकर उसके दिल में अजीब हलचल मच गयी। एक बार तो उसके मन में आया कि मां से लिपटकर उसकी गोद में सिर रख दे, और पापों का प्रायश्चित करे। मगर दूसरे ही क्षण उसे गुरुदक्षिणा की बात याद आ गयी। उन दिनों आचार्य को माता से भी ऊंचा माना जाता था। तक्षशिला के आश्रम में रहते-रहते उसके ये संस्कार इतने मजबूत हो गये थे कि वह मां की ममता को भी भूल गया और सोचने लगा कि क्यों न मां के हाथ की ही एक अंगुली काटकर अपनी माला में जोड़ लूं और आचार्य की दक्षिणा पूरी कर लूं ?

अंगुलिमाल के मन में इस तरह के खूनी ख्याल ने जोर पकड़ा और वह अपनी ही मां के हाथ की अंगुली काटने के लिए आगे बढ़ा। इतने में उसने देखा कि एक श्रमण भिक्षु भी कुछ दूरी पर, पगडंडी

से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। भिक्षु को देखते ही उसने माता के हाथ काटने का ख्याल छोड़ दिया और भिक्षु के पीछे चल पड़ा। भिक्षु कुछ दूर पर था। अंगुलिमाल ने अपनी चाल तेज कर दी। फिर वह अपनी पूरी ताकत से दौड़ने लगा। लेकिन वह उस भिक्षु के नजदीक नहीं पहुंच सका।

" आज तक बड़ी-से-बड़ी तेज चलनेवाली सवारी भी मुझसे बचकर नहीं जा सकी। तेज-से-तेज घुड़सवारों को भी मैं दौड़कर पकड़ता रहा हूं। यह कौन है, जो अपनी तेज चाल से मुझे मात दे रहा है ?" अंगुलिमाल के मन में सवाल उठा।

भिक्षु से हार मानकर अंगुलिमाल ने ललकारा, " श्रमण, ठहरो ! "

यह श्रमण भिक्षु ही महात्मा बुद्ध थे।

महात्मा बुद्ध ने कहा, " मैं तो ठहरा ही हूं। तुम दौड़ रहे हो, तुम्हीं ठहरो।"

अंगुलिमाल को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिसके पीछे पूरी ताकत से मैं भाग रहा हूं, वह कह रहा है कि मैं ठहरा हुआ हूं और वही मुझे ललकार रहा है कि ठहर जाओ !

आजतक किसी की भी यह हिम्मत नहीं हुई कि वह अंगुलिमाल को ललकारे।

अंगुलिमाल के हाथ में तलवार थी, जिससे वह सैकड़ों इन्सानों का खून कर चुका था। महात्मा निहत्थे थे, फिर भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार का डर न देखकर अंगुलिमाल और भी चकित रह गया।

अपनी सारी चालाकी भूलकर वह जहां-का-तहां खड़ा रह गया। उसने सहमी-सी आवाज में उनसे पूछा, " भिक्षु, मैं तुमसे यह पूछता हूं कि तुम ठहरे कैसे हो और मैं ठहरा कैसे नहीं हूं ? इस सबका क्या मतलब है ?"

महात्मा बुद्ध ने कहा, " अंगुलिमाल, सभी पशु-पक्षी और इन्सानों के प्रति हिंसा का ख्याल छोड़ देने से मेरा मन ठहरा हुआ है। जो इन्सान सबके लिए दिल में रहम रखता है और बदला लेने के ख्याल जितनी हिंसा भी नहीं करता है, उसका मन स्थिर रहता है, डगमगाता नहीं, बेचैन नहीं होता।"

अंगुलिमाल पढ़ा-लिखा था। उसने तक्षशिला गुरुकुल में तालीम हासिल की थी। इसलिए वह महात्मा बुद्ध की बातें समझ रहा था, लेकिन उसके मतलब को पूरी तरह दिल में बिठा नहीं पा रहा था।

इसलिए उसने फिर कहा, " श्रमण, आप अपनी बात और खोलकर कहिए ।"

महात्मा बुद्ध बोले, "अंगुलिमाल, बहुत पढ़ लेने से ही आदमी अच्छा इन्सान नहीं बन जाता । केवल शास्त्रों के रटने से इन्सान को सच्ची राह नहीं मिलती। वह भटकता रहता है । जो भटकता रहता है, वह स्थिर कैसे हो सकता है?"

अंगुलिमाल ने फिर पूछा, "भटकने का क्या मतलब है?"

महात्मा बुद्ध ने समझाया, " इसका मतलब है, मन का बेकाबू होना । हमारा मन अक्सर तभी बेकाबू होता है, जब उसमें किसी के लिए हिंसा का ख्याल आये । जो आदमी मन से हिंसा का ख्याल निकाल दे, सब जीवों के लिए दया का भाव रखे, वह कभी बेकाबू नहीं होता, उसमें ठहराव आ जाता है । हम उसे ठहरा हुआ-स्थिर-कह सकते हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंसक होते हुए तू अस्थिर है और सबके लिए दया का भाव रखते हुए मेरा मन स्थित है, मैं स्थिर हूं ।"

महात्मा बुद्ध की बात से अंगुलिमाल के मन में नयी रोशनी जाग उठी। आजतक उसने केवल शास्त्रों को रटने का काम किया था, उनकी बातों को समझकर अमल में लाने की कोशिश नहीं की थी ।

नयी रोशनी के उजियाले में उसने अपनी अंधेरी जिंदगी के खूनी कारनामे देखे । ऐसा पछतावा हुआ उसे कि वह अपनी तलवार एक ओर फेंककर महात्मा बुद्ध के कदमों में गिर पड़ा ।

महात्मा बुद्ध ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा, " अंगुलिमाल, तुम भी आज से भिक्षु बन गये । आओ, मैं तुम्हें सुख और शांति से जीने की राह दिखाऊंगा," महात्मा बुद्ध ने उसे उपदेश दिया, "भिक्षु, जो आदमी भटककर कोई पाप कर दे, लेकिन फिर से सच्ची राह पर आ जाये, उसकी आत्मा का अंधेरा मिट जाता है, जैसे बादलों से घिरे चांद के आगे से बादलों के हट जाने से चांदनी का उजाला फैल जाता है ।

" जो इन्सान अपने दिल से हिंसा का ख्याल छोड़ देता है और सबके लिए दया का भाव रखता है, वही सच्चे धर्म का पालन करता है। उसका कोई शत्रु नहीं रहता । उसके मन में हमेशा शांति रहती है, बुद्धि में प्रकाश रहता है । वह भटकता नहीं और दूसरों को



"नयी रोशनी के उजियाले में उसने अपनी अंधेरी जिंदगी के खूनी करनामे देखे ।"

भटकने से बचाता है । यही परोपकार है, यही धर्म है, यही सत्य है ।"

इस घटना के कुछ दिनों बाद ऐसा हुआ कि श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित के राजमहल के सामने बड़ी भीड़ जमा हो गयी । लोग पुकार रहे थे, " महाराज, आपके राज्य में हाहाकार मचा हुआ है । आसपास के सब लोग अंगुलिमाल डाकू से परेशान हैं । उसने गांव के गांव उजाड़ दिए हैं । लोग उससे डरकर, घर-बार छोड़कर भाग गये हैं । वह खूनी राक्षस है । मनुष्यों को मारकर वह उनकी अंगुलियां काट लेता है और उनकी माला पहनता है ।"

प्रजा की पुकार सुनकर श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित पांच सौ घुड़सवारों के साथ अंगुलिमाल की तलाश में, उसी जेतवन की ओर चल पड़े, जो अंगुलिमाल का गढ़ था ।

जेतवन में राजा प्रसेनजित की भेंट महात्मा बुद्ध से हुई ।

राजा प्रसेनजित के चेहरे पर घबराहट देखकर महात्मा बुद्ध ने पूछा, "महाराज, आप पर मगध के राजा बिम्बसार ने हमला तो नहीं किया या लिच्छिवि के राजा की सेना श्रावस्ती पर तो नहीं चढ़ आयी ? आप इतने परेशान क्यों हैं ?"

राजा ने उत्तर दिया, " भगवन, न तो मुझ पर मगध के राजा ने हमला किया है और न लिच्छिवि के राजा ने। मैं परेशान हूं अपने ही राजपुरोहित के लड़के के कारनामों से । वह इसी जेतवन में राहगीरों को लूटता है, उन्हें मारकर उनकी अंगुलियां काट लेता है । मैं यहां उसी को पकड़कर सजा देने आया हूं।"

महात्मा बुद्ध बोले, " महाराज, अगर अब वही मशहूर डाकू अंगुलिमाल गेरुए कपड़े पहने, दाढ़ी-मूंछ और सिर के बाल मुंडाकर भिक्षु बन गया हो, और उसने हिंसा छोड़कर सब जीवों पर दया भाव रखने की शपथ ले ली हो, वह सदाचारी और धर्मात्मा भिक्षु बन गया हो, तो उसके साथ आप कैसा व्यवहार करेंगे ?"

राजा ने जवाब दिया, " भगवन, यदि अंगुलिमाल ऐसा सदाचारी, सच्चा भिक्षु बन गया है, तो हम उसका स्वागत करेंगे । उसे ऊंचे आसन पर बिठायेंगे। अनाज-कपड़े का दान करके उसे धर्म

का काम करने में सहायता करेंगे। किन्तु भगवान, यह कैसे संभव है कि जिस मनुष्य ने सैकड़ों का खून किया हो, वह इतनी जल्दी सदाचारी और रहमदिल बन जाये?"

राजा प्रसेनजित को यह मालूम नहीं था कि अंगुलिमाल उस समय महात्मा बुद्ध के पास ही चुपचाप बैठा है। राजा का उत्तर सुनकर बुद्ध ने अंगुलिमाल को बांह पकड़कर उसे उठाया और कहा, "राजन, यही अंगुलिमाल है।"

राजा प्रसेनजित एकाएक उसे सामने देखकर घबरा गये।

उनकी घबराहट देखकर महात्मा बुद्ध बोले, "डरो मत महाराज, डरो मत! अब इससे डरने को कोई वजह नहीं है।"

राजा प्रसेनजित शांत हुए। खुद अंगुलिमाल के पास जाकर बोले, "आर्य, आप ही अंगुलिमाल हैं?"

"हां महाराज।"

"आपके पिता किस गोत्र के हैं और माता किस गोत्र की हैं?"

"महाराज, पिता गार्ग्य और माता मैत्रायणी गोत्र की हैं।"



"आर्य, गार्ग्य-मैत्रायणी पुत्र, आप बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर सुख से रहिए। हम आपकी अन्न-बस्त्रादि से पूरी तरह सेवा करेंगे।"

राजा प्रसेनजित ने महात्मा बुद्ध से हाथ जोड़कर कहा, "भगवन, हम सजा और हथियारों से पापियों का पाप दूर करने की कोशिश करते हैं। आपने बिना सजा और हथियार के अंगुलिमाल जैसे आततायी को काबू में कर लिया। आप धन्य हैं।"

उस दिन के बाद अंगुलिमाल भिक्षु कहलाने लगा। एक दिन वह भिक्षा के लिए जाते हुए रास्ते में एक गर्भवती स्त्री से मिला, जो दर्द से कराह रही थी।

अंगुलिमाल बाद में महात्मा बुद्ध के पास पहुंचा और बोला, "भगवन, आज जब मैं श्रावस्ती में भिक्षा के लिए गया तो एक गर्भवती स्त्री को दर्द से कराहते देखा। इसी तरह कितने ही लोग दुःख-दर्द से तकलीफ पा रहे हैं। उनका दुःख कैसे दूर किया जाये?"

महात्मा बुद्ध बोले, "अंगुलिमाल, जहां वह स्त्री है, वहां जाओ। उससे जाकर कहो कि बहन यदि मैंने जन्म से आजतक जान-बूझकर कोई हिंसा न की हो तो तेरे दुःख-दर्द दूर हो जायें।"

अंगुलिमाल बोला, "भगवन, यह कहना तो झूठ बोलना होगा। मैंने तो जान-बूझकर बहुतों को मारा है।"

"अंगुलिमाल, तब तू वहां जाकर यह कह कि बहन यदि मैंने आर्य भिक्षु बनकर किसी की हत्या न की हो, तो तेरा दुःख-दर्द दूर हो जाये," महात्मा बुद्ध ने कहा।

अंगुलिमाल ने जाकर ऐसा ही कहा और सचमुच ही उस स्त्री का दुःख-दर्द दूर हो गया।

इस घटना के बाद अंगुलिमाल बौद्ध भिक्षुओं के साथ रहने लगा। उन्हीं की तरह भिक्षा का पात्र लेकर वह घर-घर जाता और भिक्षा से ही अपना गुजारा करता। उसने फिर अपना पहलेवाला नाम ही अपना लिया। सब लोग उसे अहिंसक के रूप में जानने लगे। ●

कृशा गौतमी

श्रावस्ती नगर में गौतमी नाम की एक सुंदर स्त्री रहती थी। गरीब घराने में जन्म लेने और धनी घर में विवाह होने के कारण ससुराल में उसका उचित आदर नहीं होता था। दुबली-पतली होने से लोग उसे कृशा गौतमी कहते थे।

कुछ समय बाद गौतमी के एक पुत्र की मां बनने के बाद उसका आदर होने लगा। पुत्र का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। गौतमी सुन्दरी थी, बच्चा भी सुन्दर था। गौतमी की जिंदगी खुशी और रोशनी से भर गयी।

लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। किस्मत ने पलटा खाया। बालक बीमार पड़ा। बहुत दवा-दारू की गयी। नगर के वैद्यों-हकीमों ने दवा की, मगर बालक ने प्राण छोड़ दिए।

सास-ससुर, रिश्ते-नातेवाले उस बालक के शरीर को चिता पर जलाने ले जाने की तैयारी करने लगे। बालक की मां गौतमी को यकीन ही न होता था कि बालक ने हमेशा के लिए आंखें मूंद ली हैं। और यह कि अब उसकी पलकें कभी



खुलेंगी नहीं, उसकी सांस कभी फिर चलेगी नहीं, उसके होठ हंसने-बोलने को कभी हिलेंगे नहीं।

इससे पहले कि लोग बालक के जिस्म को जलाने ले जाते, मां गौतमी अपने मुर्दा बच्चे को गोद में लेकर घर से निकल गयी। उसे यकीन था कि दुनिया में कोई हकीम, कोई वैद्य या कोई ऐसी ताकत जरूर होगी जो उसके बालक को जिंदगी दे सकेगी।

आंसू बहाती, विलाप करती गौतमी घर-घर जाकर सबसे अपने बालक को जिला देने की भीख मांगने लगी। वह नगर के सब वैद्यों, हकीमों, सन्तों के दरवाजे खटखटाती रही।

जब किसी ने भी मरे बच्चे को जिन्दा करने का भरोसा न दिलाया तो रोते-रोते वह होश-हवास खो बैठी। पागल-सी, दर-दर भटकने लगी, मगर मुर्दा बच्चे की लाश उसने छाती से चिपटा रखी थी।

कुछ लोग उसे देख उसकी किस्मत पर रो देते थे और कुछ उदंड ताली बजाकर हंसी-ठठ्ठा करते थे।

एक भले आदमी ने उसे समझाया, "बहन, अगर तू महात्मा बुद्ध की शरण में जायेगी तो शायद वे तेरे बच्चे में नयी जान फूंक सकेंगे। उनसे बड़ा वैद्य दुनिया में कोई नहीं है।"

गौतमी यह सुनकर महात्मा बुद्ध की शरण में गयी। उन्होंने बड़े धीरज से उनकी बात सुनी और बोले, "बेटी, अगर ऐसे घर से, जहां कभी किसी की मौत न हुई हो, पीली सरसों ला सको तो मैं तुम्हारे बच्चे को मौत के पंजे से छुड़ा सकूंगा।"



गौतमी के मन में आशा की एक किरण जागी। घर-घर जाकर उसने पूछना शुरू किया कि कोई तो घर ऐसा मिले जहां मौत ने अपने कदम कभी न रखे हों।

हर घर के दरवाजे पर वह जाती थी और कहती थी, "बहन, महात्मा बुद्ध ने आपके घर मुझे सरसों लाने को भेजा है। आप कृपा करके मुझे कुछ दाने दीजिए।"

घरवाली जब मुट्ठी भर सरसों के दाने लाती और गौतमी की झोली में डालने लगती, तो गौतमी कहती, "जरा ठहरिए। पहले यह बतलाइए, इस घर में कभी किसी की मौत तो नहीं हुई ?"

सब यही कहते, "बहन, इस घर में कब किसकी मौत हुई कौन जाने ? भला ऐसा भी कोई घर होगा, जहां कोई मौत न हुई हो।"

नगर के सैकड़ों घरों से यही बात सुनकर गौतमी की आंखें खुलीं। उसकी आत्मा ने उससे कहा, "पगली, सभी घरों

में मौतें हुई हैं। किसी-न-किसी प्यारे की मौत से सभी के दिल घायल हैं। मगर सब पागलों की तरह दर-दर बिलखते तो नहीं फिरते। तू ही क्यों पगली बनकर भटक रही है? तू क्या सबसे अनोखी है?"

अपने अंदर से उठती इस आवाज को गौतमी अनसुना न कर सकी। उसका पागलपन खत्म हो गया। ज्ञान की आंखें खुलीं। आंसू सूख गये। वह समझ गयी की महात्मा बुद्ध ने उसे यही ज्ञान देने के लिए सरसों लाने को कहा था।

वह ठंडे दिल से श्मशान में गयी और गोद में चिपटे बच्चे की मुर्दा लाश का संस्कार कर आयी।

लौटकर गौतमी महात्मा बुद्ध के पास गयी।

उन्होंने पूछा, "गौतमी, क्या सरसों के दाने मिल गये? क्या कोई ऐसा घर मिला, जहां मौत ने कदम न रखा हो?"

गौतमी ने महात्मा बुद्ध के चरणों की धूल अपने माथे पर लगायी।

बुद्ध ने मधुर स्वर में उसे उपदेश दिया, "गौतमी, इस दुनिया में जो आया है, उसे जाना भी है। न आना अपने हाथ है, न जाना। हानि-लाभ, सुख-दुख सबमें समभाव से रहते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है। जो अपने हाथ में नहीं है, उसके लिए शोक करना झूठा अभिमान है। जन्म-मृत्यु अपने हाथ में नहीं है। इन्हें लेकर सुखी और दुखी होना झूठा है। झूठ से दूर रहो। सच्चाई को जानो और शांत मन से, धीरज से अपने धर्म-मार्ग पर चलती रहो।"

गौतमी ने भिक्षुणी का धर्म अपना लिया और जीवन भर अपने को सेवा में लगा दिया। ●

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृष्ण का गोवर्द्धनधारण
- अचल आख्यान
- हक की रोटी
- श्वेतकेतु
- प्यारे नबी
- घास के मूसल
- द्रोण-द्रुपद
- बलि का बकरा
- हज़रत राबिया बसरी
- सेवा की राह

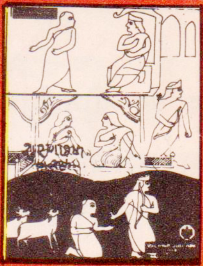
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938 में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी दूसरी किस्त है। हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी।

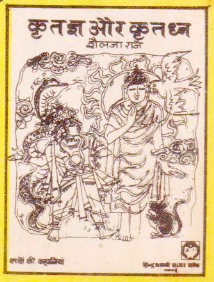
बच्चों की कहानियां


अंगुलिमाल
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

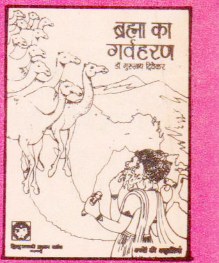

भगीरथ

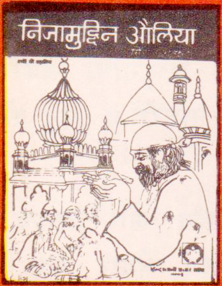


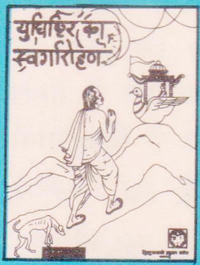



कृतज्ञ और कृतघ्न




ब्रह्मा का गर्वहरण


निजामुद्दीन औलिया


युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण


तीन साधु